MR. CHAIRMAN: Now, there is a statement regarding Government Business. Shri Dilip Ray.

ANNOUNCEMENT RE. GOVERNMENT BUSINESS FOR THE WEEK COMMENCING 6TH JULY, 1998

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI DILIP RAY): Sir, with your permission I rise to announce that the Government Business during the week commencing Monday, 6th July, 1998 will consist of:-

1. Discussion on the Statutory Resolutions seeking disapproval of the following Ordinances and consideration and passing/return of the Bills replacing these Ordinances as passed by Lok Sabha:-

(i) The Essential Commodities (Amendment) Ordinance, 1998.

(ii) The High Court and Supreme Court Judges (Conditions of Service) Amendment Ordinance, 1998.

(iii) The Lotteries (Regulation) Ordinance, 1998.

2. Consideration and return of the Finance (Amendment) Bill, 1998 as passed by Lok Sabha.

3. Consideration and return of the Appropriation (Railways) No. 3 Bill, 1998 as passed by Lok Sabha.

4. Discussion on the working of the following Ministries:-

(i) External Affairs; and

(ii) Human Resource Development.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Sir, may I know from the Government about the Womens' Reservation Bill and Lokpal Bill? Has the Government made up its mind or is it still considering? If they are sti considering, then I have the apprehension that the Government is in no mood to keep its commitment to the House because in the last Session a categorical statement was made by the Government that they willl be introducing and seeking the co-operation of all parties to get the Women's Reservation Bill passed. Let us know if the Government is ready to move it now.

MR. CHAIRMAN: Mr. Sikander Bakht, do you have to say anything in this regard?

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI SIKANDER BAKHT): We are already committed to it. We are committed to bring the Bill.

...(Interruptions)...

SHRI GURUDAS DASGUPTA: Then, why is it not in the List? If it is so, why is it not in the List? If the Government is still committed and if they feel that there is a commitment to fulfil their pledge to the House, why is it not there in the List?

SHRI NILOTPAL BASU (West Bengal): The hon. Leader of the House had mentioned that on the first day itself the Bill would be moved. So, I think we have the legitimate ground to ask why is there *...(Interruptions)...*

SHRI GURUDAS DASGUPTA: Sir, history is repeating itself in respect of the present Government. It does not keep its promise. *...(Interruptions)...*

DR. BIPLAB DASGUPTA: Sir, the Leader of the House should respond. *...(Interruptions)...*

SHRI GURUDAS DASGUPTA: I want to know whether history is repeating itself.

SHRI SIKANDER BAKHT: We are committed to bring the Women's Reservation Bill.

SHRI GURUDAS DASGUPTA: When? *...(Interruptions)...*

DR. BIPLAB DASGUPTA: Silence itself is eloquent. *...(Interruptions)...*

SHRI GURUDAS DASGUPTA: Sir, Governments have been makingambiguous commitments for too long. Let us know when and how. *...(Interruptions)...*

SHRI NILOTPAL BASU: There is eloquent silence on the part of the Government.

DR. BIPLAB DASGUPTA: Sir, you will recall that during the last part of the last Session, the women Members of the House raised the issue and the Minister of Home Affairs said that it would be moved. But, we wanted a date. The Assurance we got from the Home Minister was this: It is going to be done very early. Has there been any decision to bring it and by when?

SHRI SIKANDER BAKHT: I have said, yes, we are going to bring it.

DR. BIPLAB DASGUPTA: By when? Can

you give a date?

SHRI SIKANDER BAKHT: I don't know the date. ...*(Interruptions)*...

DR. BIPLAB DASGUPTA: Sir, this is not what we wanted. We wanted a date. ...*(Interruptions)*...

SHRI GURUDAS DASGUPTA: Sir, gentle laugh or laughing-stock? I would like to know whether it is a gentle laugh or making a laughing-stock.

SHRI NILOTPAL BASU: We should not further embarrass the Government.

MR. CHAIRMAN: Now, we take up the first Special Mention on price-rise. Shri Suresh Pachouri - not here. Shri Vayalar Ravi — not here. Prof. Vijay Kumar Malhotra.

SPECIAL MENTIONS

Rise in Prices of Essential Commodities

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्र (दिल्ली): सभापति महोदय, पिछले कुछ दिनों से महंगाई के विषय में बहुत चर्चा हो रही है और आज यहां सदन के बाहर धरना भी दिया जा रहा है तथा जगह-जगह इसके बारे में आंदोलन भी हो रहे हैं। महोदय, यह विपक्ष का काम है कि महंगाई का विषय उठाए और मुझे उस पर कोई आपत्ति भी नहीं है। क्योंकि महंगाई सारे देश के लोगों को तंग करती है, चुभती है और उसके कारण घर को बजट में चलाना बड़ा मुश्किल हो जाता है। परन्तु मैं यह जरूर स्पष्ट करना चाहता हूं कि इस मंहगाई के बारे में दो बातें हैं। एक तो यह है कि जो औद्योगिक उत्पादन है, इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन है, उसमें कोई महंगाई नहीं हुई है। आप देखेंगे कि जो इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन है, उसमें बल्कि महंगाई कम हुई है, चीजों के दाम कम हुए हैं और इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन के ऊपर कोई भी ऐसी आइटम ...(व्यवधान)...

श्री शंकरराव चव्हाण (महाराष्ट्र): आप किसके ऊपर बात कर रहे हैं? महंगाई बढ़ी है या नहीं बढ़ी, आप किसके ऊपर बात कर रहे हैं।

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्र: आपके यहां से दो सदस्यों ने इस विषय पर स्पेशल मैंशन रखा था, वे बोले नहीं, मैंने भी इससे अपने आपको एसोसिएट किया था।

श्री मोहम्मद सलीम (पश्चिमी बंगाल): सर, विपक्ष ने यह सवाल उठाया ही नहीं, अब वे एसोसिएट कर रहे हैं यह अच्छी बात है।

†[ ]

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्र: सभापति जी, दूसरी तरफ कुछ चीजें हैं जिनमें महंगाई बढ़ी है, वह चिंताजनक अवश्य है। एक तो खाद्य तेलों के अंदर कीमतें बढ़ी हैं। खाद्य तेलों में जो कीमतें बढ़ी हैं, उसके कारण से काफी कठिनाइयां पैदा हो रहीं हैं, परन्तु उसके भी कुछ कारण हैं। एक तो कारण यह है कि इसको ओजीएल में रखा हुआ था, पहली सरकार ने भी, जो यूएफ॰ या कांग्रेस की सरकार थी, इसको ओजीएल में रखा हुआ था और ओजीएल में इंडोनेशिया से, मलेशिया से खाद्य तेल आ जाते थे जब यहां देश में महंगाई होती थी , परन्तु इस बार दुर्भाग्य से इंडोनेशिया ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया, मलेशिया ने भी उन खाद्य तेलों को आने नहीं दिया और उसके कारण से यहां महंगाई बढ़ गई है और उसके लिए कुछ उपाय किए जाने चाहिए और ओजीएल में यदि इम्पोर्ट नहीं हो पा रहा तो सरकार को इस बारे में कुछ कदम उठाने चाहिए क्योंकि ओजीएल में यदि होगा तो प्राइवेट पार्टीज को दिया जाएगा और प्राइवेट पार्टीज़ इस समय लाने की स्थिति में नहीं है। मुझे आशा है कि सरकार इस बारे में कुछ कदम उठाएगी।

कुछ महंगाई हुई है फल और सब्जियों में। फल और सब्जियों के बारे में मैं यह कहना चाहता हूं कि इनमें आम तौर पर इन दिनों में जब बारिश होती है तो महंगाई हो जाती है।

कुमारी सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र): आप महंगाई के बारे में बोल रहे हैं?

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्र: जी।

कुमारी सरोज खापर्डे: मैं आपका बहुत आदर करती हूं, लेकिन यह कहना कि बारिश की वजह से सब्जियों में महंगाई हो गई, यह बात गलत है। बारिश के कई पहले से कीमतें बढ़ी हुई हैं, उनकी रोकथाम के लिए आप क्या कर रहे हैं मुझे यह बताइए आप?

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्र: मैं यह कह रहा था कि आम तौर पर जब बारिश होती है और आने-जाने के रास्ते जब रूक जाते हैं तो कीमतें बढ़ जाती हैं। आप पिछले कई सालों का रिकार्ड निकालकर देखें, जब हम अपोजीशन में होते थे, उन दिनों हम यह सवाल उठाया करते थे और तब यह जवाब दिया जाता था कि बारिश के दिनों में आने-जाने के रास्ते बंद होने के कारण ये महंगी हो जाती हैं।...(व्यवधान)...

---

†[ ]Transilteration in Arabic Script